

नियम-④ यदि किसी शब्द के अन्त में 'अ, इ, ई, य, एय, इक्, अयन

या आयन' प्रत्यय जुड़े हों तो शब्द के प्रारम्भ में आने
वाले स्वर में निम्नानुसार परिवर्तन हो जाता है-

(i) शब्द के प्रारम्भ में आने वाले स्वर 'अ का आ' हो जाता है-

जैसे- मनु + अ = मानव, रघु + अ = राघव, वसुदेव + अ = वासुदेव,

मगध + अ = मागध, नर + आयन = नारायण वत्स्य + आयन = वात्स्यायन

वाल्मीक + इ = वाल्मीकि, दशरथ + इ = दाशरथि.

अदिति + य = आदित्य, जनक + ई = जानकी, पर्वत + ई = पार्वती.
मधुर + य = माधुर्य, स्वस्थ + य = स्वास्थ्य, समाज + इक = सामाजिक
अंजनि + एय = अंजनेय, गंगा + एय = गंगेय.
शरीर + इक = शारीरिक, व्यवसाय + इक = व्यावसायिक

(ii) शब्द के प्रारम्भ में आने वाले स्वर 'इ/ई/ए' का से हो जाता है-
 जैसे- इंद्र + ई - ऐंद्र, विष्णु + अ - वैष्णव, शिव + अ - शैव,

विदेह + ई - वैदेही, अर्थ + इक - आर्थिक, विज्ञान + इक - वैज्ञानिक
 निरन्तर + य = नैरन्तर्य, ईश्वर + य - ऐश्वर्य, नीति + इक - नैतिक
 राजनीति + इक = राजनीतिक, विभु + अ = वैभव, विचार + इक - वैचारिक,
 एक + य = ऐक्य, वेद + इक - वैदिक, केकेय + ई = केकेयी

(iii) शब्द के प्रारम्भ में आने वाले 'उ/ऊ/ओ का ओ' हो जाता है -
 जैसे- उद्योग + इक - औद्योगिक, उपचार + इक - औपचारिक,
 कुशल + अ - कौशल, कुमार + य - कौमार्य, उदार + य - औदार्य,
 कुंती + एय - कौंतेय, सुन्दर + य - सौन्दर्य,
 भूत + इक - भौतिक, मूल + इक = मौलिक, लोक + इक - लौकिक,
 योग + इक - योगिक, उपनिवेश + इक - औपनिवेशिक

(iv) शब्द के प्रारम्भ में आने वाली 'ऋ का आर्' हो जाता है-

जैसे- पृथा + अ - पार्थ, गृहस्थ + य - गार्हस्थ्य,
 आर् आर्

पृथक् + य - पार्थक्य,
 आर्